International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भील क्रांतिकारी 'रॉबिनहुड' तंटया भील

मानसिंह चौहान
शोधार्थी – इतिहास
रवीन्द्रनाथ टैगोर वि.वि भोपाल
संकाय

डॉ. सावित्री सिंह परिहार
शोध निर्देशक – एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास
मानविकीय एवं उदारकला
रवीन्द्रनाथ टैगोर वि.वि भोपाल (म.प्र)

सारांश–भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भील विद्रोहियों का इतिहास महत्वपूर्ण था, जो कि मराठा शासन के अंत के बाद 1818 में हुआ था।पश्चिमी मध्यप्रदेश के सतपुडा के बहादर भीलों ने कई वर्षो तक अंग्रेजों के साथ गुरिल्ला लडाई लडी, जिसमेंभील क्रांतिकारी तंटया भील का संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वर्णित अक्षरों में याद किया जाता है। शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार की 11 वर्षो तक नींद उडा देने वाले तंटया भील अंग्रेजों की दृष्टि में एक डाकू था लेकिन आदिवासियों, किसानों एवं साहूकारों तथा जुल्मी सरकार के विरूद्ध विद्रोह करने वाले तंटया भील था।

तंटया भील –

आज से 200 साल पूर्व पश्चिमी मध्यप्रदेश जिसे हम निमाड कहते है, उसके उत्तर में होलकर और पूर्व में भोसले की रियासत थी।मराठा शासन का अंत हुआ, बाद में मुस्लिम शासन का भी अंत हो गया। ब्रिटिश शासन आ गया, उस समय यहां के बेरोजगार, बेकार सैनिकों ने निमाड में लूटपाट चालू कर दी। इन सैनिकों का टोलियों को 'पेंढारी' कहा जाता है। इन पेंढारियों के विरूद्ध अंग्रेजों ने एक अभियान चलाया। सतपुडा–विंध्य पर्वत के भील अपना जीवन–निर्वाह करने के लिये अपने गांवों के आसपास चोरियां एवं लूटपाट करते थे।ऐसी एक नहीं बलिक कई टोलियां थी, इसे नियंत्रित करने के लिये कैप्टन औट्रम ने एक योजना बनाई। इसके लिये उन्होंने भीलों को प्रलोभित करने क लिये नौकरियां देने के उद्देश्य से भील पल्टन बनाई। वेतन एवं नौकरी की आशा में कुछ भील इसमें शामिल हुये लेकिन कुछ भील स्वाभिमानी होने के कारण इनकी नौकरियां नस्वीकार न करते हुये स्वतंत्र रूप से रहने के लिये पहाडों पर चले गये। इसलिये इन्हें पकडना असंभव हो गया। ये कई सालों तक सतपुडा के दक्षिण में खानदेश उत्तर में निमाड में रहकर चोरी एवं लूटपाट करते थे और जंगलों में छुप जाते थे।

बेकसूर तंटया को जेल–जंगल और पर्वत आदिवासी भीलों की रहने की जगह थी, क्योंकि उन पर उनका अधिकार था। अंग्रेज सरकार ने जंगल में पेड काटना गुनाह बताकर उसके लिये कानून बनाये जिससे भीलों का जंगलों से अधिकार भी छीन गया। पाल के उत्तर में तंटया के पिता भाऊसिंग और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उनकी माता जिवनी रहते थे क्योंकि उनके पास वहां पर कुछ जमीन थी। तंटया की माता का देहात होने के पश्चात भाऊसिंग पाटील की जमीन पर पटटेदारी से खेती करते थे, लेकिन बारिश न होने के कारण भाऊसिंग लगान न दे सकें, तो पाटील ने उनकी जमीन हथिया ली।

तंटया ने अपनी पैतृक जमीन छुडाने के लिये पाटिल के यहां मजदूरी की और अपनी पैतृक जमीन पर बकाया लगान चुकाकर वापस अपनी जमीन लेनी चाही। लेकिन शिवा पाटिल उसे उसकी पैतृक जमीन देने के लिये राजी न था, इसलिये भोले–भाले तंटया को झूठा आश्वासन देकर उससे काम लेता रहा। तंटया से मुक्ति पाने हेतु पाटिल ने तंटया को एक झूठे आरोप में फंसाकर उसे दो साल की जेल करा दी। तत्पश्चात न्यायालय ने पाटिल की झूठी गवाही को न मानते हुये निचली अदालत का फैसला रदद कर दिया। यह देखते हुये पाटिल ने दुबारा तंटया को झूठे चोरी के आरोप में फंसाया। निचली अदालत ने फिर तंटया को 1873 में एक साल की कठोर सजा सुनाकर नागपुर के सेंट्रल जेल में भेज दिया।

जेल से छटने के बाद तंटया फिर पाटिल के पास जाकर अपनी जमीन वापस लेने के लिये पुनः मजदूरी करने लगा। इसी बीच पास के बारी गांव में चोरी हो गई और शक के आधार पर तंटया और उसके मित्र बिजानिया को पुलिस गिरफ्तार किया। चोरी का आरोप सिद्ध तो नहीं हुआ लेकिन तंटया एवं बिजानिया ने पुलिस से हाथापाई करने के जुर्म में 3–3 महीने की सजा हो गई, तो तंटया को जबलपुर जेल में और बिजानिया को खंडवा की जेल में बंद किया गया।

दूसरी बार जेल से बाहर आने के बाद तंटया जो कि बेकसूर होकर भी सजा काट कर आ रहा था। इन दोनों घटनाओं ने तंटया को विद्रोही बनाने का परिवेश तैयार किया। उसके मन में आया कि उसकी गरीबी और मजबूरी के कारण पाटिल अकारण झूठे आरोप लगाकर झूठे मामलों में फंसा रहा है। इसलिये उसने तय किया कि वह अब ब्रिटिश क्षेत्र में न रहकर होलकर रियासत के सिओरा गांव में जाकर बस गया। तंटया ने देखा कि ईमानदारी से एक भील का जीवन नहीं चल सकता, पाटिल उसे जीने नहीं देगें तो उसने लूट और डकैती की ओर अपना कदम रखा। वह अपने साथियों के साथ जीवनयापन के लिये छोटी–मोटी चोरिया करने लगा। इस प्रकार पाटिल के उत्पीडन के कारण तंटया और उसके साथी अपराधी जीवन की ओर बढ चुके थे।

गरीबों का तारणहार–निमाड के लोग सदियों से सांमती जुल्मों से आक्रांत थे। राजपूत आर मुसलमान सरदारों, मराठों, शिदे और होलकर सबने निमाड के लोगों को लूटा था। अंग्रेजों ने मराठों से इस क्षेत्र को लेने के बाद पूर्वी निमाड (खंडवा) और पश्चिमी निमाड (खरगोन) में विभक्त कर दिया था। पूर्वी निमाड पर ब्रिटिशों की और पश्चिमी पर होलकर की हुकूमत थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अब निमाड जिले के गांव–गांव और घर–घर में तंटया का नाम गूंजने लगा था। ब्रिटिश सरकार उसे डाकू मानते थे, लेकिन तंटया अपनी लूट से हजारों अनाथ और असहायों की सेवा की। वह शत्रुओं के लिये काल, अंग्रेजों के विरोधी, कंजूसों का दुश्मन और पुलिस के पुलिस था। जहां उसके दुश्मन रहते थे, जहां उसको पकडने का षडयंत्र रख जाता, जहां पुलिस के सहायक रहते, वही तंटया का स्थान बन जाता था। तंटया चरूला जंगल का रॉबिनहुड बन चुका था। गरीब अंधविश्वासी किसान अब तंटया को दैवीय पुरूष मानने लगे थे। तंटया गांव की बेटियों–बहनों की शादियों में जाकर लडके–लडकियों के पिता के साथ वर–वधू क पास जाकर आर्शीवाद एवं भेंट स्वरूप कुछ रूपये देकर चला जाता था, इसलिये तंटया को सभी लोग 'तंटया–मामा' कहने लगे।

निमाड के लोग कई वर्षो से जुल्म, अत्याचार सहते आ रहे थे, 800 साल से यही चला आ रहा था। इस समयअंतराल में कई रियासतें स्थापित हुई। उत्तर से राजपूत आये, बाद में मुसलमान सरदार आयें। उससे पहले सीनीय हिंदू राजा भी थ।, इन सब ने कभी जनता का हित नहीं सोचा। दो राज्यों के राज्यों की लडाई में सैनिक जनता को लूअते थे। उसके बाद साहूकार–मालगुजारों ने जनता का शोषण किया, इस प्रकार यह सिलसिला चलता आ रहा था। पहले निमाड में राजपूत और मुसलमान सरदारों का राज था। उनके बाद मराठों ने इस मुल्क को जीत लिया। शिंदे और होलकर मराठा सरदार थे उनके बीच सत्ता को लेकर हमेशा विवाद होते रहते थे, जिसका फायदा अंग्रेजों को मिलता था। उन्होंने ही निमाड को पूर्व एवं पश्चिम निमाड में विभाजित कर दिया था। पश्चिम निमाड अर्थात खरगोन का टापू इंदौर के होलकरों को दे दिया था और पूर्व निमाड यानी खंडवा जिला शिंदे सरदारों को दे दिया था। उन्होंने यह भाग अंग्रेजों को भेंट दे दिया था। उसकी आय से ब्रिटिश सेना का खर्च उठाया जाता था।पूर्व निमाड पर ब्रिटिशों का और पश्चिमी निमाड पर होलकरों का राज था। दोंनों विभागों में गांव के स्तर पर पाटील–मालगुजार प्रमुख थे। राजस्व वसूली का काम मालगुजार करते थे, क्योंकि उनकी पकड गांव पर होती थी। गांव में जो लोग अमीर होते थे, वे साहूकारी करते थे। इस प्रकार साहूकार, पाटील और मालगुजार इन तीनों का गांव में दबदबा रहता थ। वे सत्ताधारी लोंगों से अच्छे संबंध रखते थे और ये सतताधारी लोग जनता से अधिक अमीर वर्ग के ही हित को महत्व देते थे। किसान एवं जनता गरीब थी इस कारण आदिवासी भील मालदार के पास सालदारी–पटटेदारी करते थे। ये लोग आदिवासी भीलों से जानवरों के समान श्रम करवाते थे। वे बंधुआ मजदूरों का जीवन जी रहे थे। वे कभी किसी से शिकायत नहीं करते थे, लेकिन उनके मन में अमीरों के प्रति क्रोध अधिक था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जब तंटया आया, हर जगह उसका ही नाम गूंजने लगा तो आजतक पाटील के खिलाफ कोई आवाज नहीं उठा सकता था। मालगुजार का भी सभी जगह दबदबा था और गांव के आर्थिक सूत्र साहूकारों के हाथ में था।

इस कारण तंटया इन सबकों सबक सिखाना चाहता था। वह मालगुजारों, पाटिलों एवं साहूकारों को सजा देता था। यह सब देखकर शोषित, पीडित लोग खुश होते थे और तंटया का हर काम उन्हें उनके लिये किये जाने का गर्व होता था। इसलिये वे उसे अपना तारणहार समझते थे, सभी गांव–गांव के लोग उसकी मदद करने को तैयार रहते थे।

तंटया लूट–डकैती के पैसों को जरूरतमंद लोगों एवं अपने साथियों में बांट देता था। जसे कि गरीबों को पैसों की जरूरत पडने पर साहूकार के सामने अधिक ब्याज पर रू. लेने के लिये हाथ पसारना पडता था।तंटया बिना की सूद के उनको पैसों की मदद करता था और कहता था कि उनको अब साहूकार के पास जाने की कोई जरूरत नहीं है। जब भीपसें की आवश्यकता हो तंटया से मांग ले। इस प्रकार तंटया ने गरीबों को पैसों की मदद देनी शुरू कर दी थी। तंटया के साथी गांव–गांव जाकर लोगों की मदद करते थे।यह मदद कई प्रकार की होती थी। जैसे कि विवाह–समारोह के लिये मदद करते, किसी किसान के पास खेती के लिये बैल नहींहोता तो उसे बैंल खरीद देते। खेत में बोने के लिये किसी के पास बीज नहीं होता तो उसे बीज खरीद देते। किसान अनाज बेचने दुकानदार के पास जाता तो वह उनके अनाज को कम भाव में खरीदने के साथ ही अधिक वजन लेता, डंडी मारता, मापारी का हिस्सा पहले निकाल लेता आदि। ऐसे कई प्रकार का शोषण करते थे। तंटया इनका अनाज बनिये से अधिक भाव देकर खरीद लेता था। यह सब देखते हुयेठाकुर तखरसिंह को तंटया के प्रति सहानुभूति थी और वह सोचता था कि जो काम वह नहीं कर सका वह सब काम तंटया कर रहा है। इसलिये वह तंटया का आदर करता था।

तंटयाके मन में गरीबों के प्रति करूणा थी, वह अपने साथियों से प्रेम करता था। लेकिन अगर किसी साथी ने गलती की तो उसे वह कठोर सजा भी देता था। वह सबको समान मानता था और यही उसका न्याय था। दूसरे की यातना उसे अपनी यातना लगती थी, वह दूसरों के दुखों में भी शरीक होता था। लेकिन किसी ने उसे या उसके किसी साथी–रिश्तेदार को परेशान किया तो वह सीधे उनकी नाक काट देता था। इसलिये वह दोस्त का दोस्त और दुश्मनों का दुश्मन था।

तंटया का अंत–तंटया 45 साल से अधिक के हो गया था, ब्रिटिश सरकार के साथ लुकाछिपी करते हुये, अब उन्होंने सोचा कि क्यों न अब आत्मसमर्पण किया जायें। क्योंकि उनका कोई ठिकाना नहीं था, जंगल–जंगल भागते, बिना बिस्तर, पहाडों और गुफाओं में सोते, कभी फल खाकर रहने और कभी भूखे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रह बागी जीवन की अनिश्चितता में जीतें हुये। अब वे यह सब करके हार गया था, क्योंकि उनको अब बुढापे का अहसास हो रहा था। इसलिये अब वे सरकार से क्षमादान के लिये आवेदन करने पर गंभीरता से विचार करने लगे। तंटया के मुंहबोले बहनाई गणपत जिसकी पत्नी को तंटया बहन मानता था, 7 अगस्त 1889 को तंटया उसके घर रक्षाबंधन को राखी बंधवाने गया तो गणपत ने पुलिस को पहले ही खबर कर दी थी कि 11 अगस्त को तंटया उसके घर राखी बंधवाने आने वाला है तो पुलिस पूरे बंदोबस्त के साथ गणपत के घर के आसपास छिप गई। तंटया को लगा कि गणपत के घर उसको कोई खतरा नहीं है, इसलिये वह अपनी मुंहबोली बहन को बुलाते हुये उसके घर में घुस गया। लेकिन घर में उसकी बहन नहीं है, बल्कि गणपत के घर छिपी हुई पुलिस ने तंटया भील को गिरफ्तार कर लिया। इस प्रकार हमेशा चौंकन्ना रहने वाला बागी तंटया को धोखे से फंसा लिया गया। जबकि उसकी तात्कालीन मनोस्थिति की समीक्षा की मांग करता, अन्यथा तंटया जैसे विद्रोही भील ब्रिटिश सेना से खुद सुरक्षा के लिये, बिना पहरेदारी के नहीं सोते थे। दिन–रात एक के बाद एक पहरेदार तैनात रहते थे। कुछ सोते तो कुछ हमेशा जागते थे।

तंटया को गिरफ्तार करके बाद उसकी शिनाख्त करना बडा मुश्किल था, आसपास के लोगों से उसकी पहचान कराई गई। तंटया की एक खासियत थी कि उसे एवं उसके सगे–संबंधियों को जो भी परेशान करता तंटया उनकी नाक काट देता था, इसलिये उन लोगों को बुलाया गया, जिनकी तंटया ने नाक काटी थी। उनके द्वारा तंटया की पहचान कराई गई। अंत में तंटया ने स्वयं ही स्वीकार कर दिया कि वह ही तंटया है, उसी ने इन लोगों की नाक काटी थी। वह ही 13 वर्ष पूर्व खंडवा को जेल से भागा था। उस समय वह दुबला–पुतला और लंबा, बलिष्ठ आदमी था लेकिन अब वह 50 साल का हो चुका था। उसे सजा दिलाने के लिये प्रेसिडेंसी जेल में डाल दिया गया, और उसे फांसी की सजा सुनाई गई।

तंटया का नाम भील समुदाय में महानायकों की तरह लिया जाता है। वह कई वर्षो तक खानदेश के विशाल क्षेत्र में घूमता रहा। उसको पकडने के ब्रिटिश सरकार के सभी प्रयास विफल रहें। उसको पकडनें की सभी प्रयास विफल होने के कारण ब्रिटिश सरकार निराश हो गई थी। उसे बिना सूचना दिये ब्रिटिश सरकार ने जिस तरह से गिरफ्तार किया, इससे स्पष्ट होता है कि बिना विश्वासघात के इस भारतीय भील डाकू 'रॉबिनहुड' को कोई पकड नहीं सकता था।

अतः हम कह सकते है कि तंटया कोई आम डाकू नहीं था, बल्कि वह एक महान यौद्धा, क्रांतिकारी था। जिसने देश के संवैधानिक अधिकारियों को शून्य बना दिया था, जिन अधिकारियों को देश का उद्धारक कहा जाता था। तंटया में सभी नैतिक गुण थे जो मानव जीवन के लिये आवश्यक है। उसमें दया, न्याय, सौम्यता, करूणा, संयम, साहस एवं मित्रता आदि के महान गुण थे। यही नहीं उसने

जितने भी लोगों की नाक काटी, हत्या की या मजाक उडाया, वे सभी उसके अपराधी थे जिन्होंने उसको परेशान किया था। इसके अलावा उसने गांव की बहन–बेटियों की इज्जत पर आंच नहीं आने दी। गांव के जाने–अनजाने कई गरीब परिवारों की बिना भेदभाव किये गरीबी दूर कर उनपर होने वाले अत्याचार, शोषण एवं अन्याय के प्रति आवाज उठाकर उससे उनको मुक्ति दिलाई। ऐसा था भील क्रांतिकारी तंटया भील जिसे इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में याद किया जाता है।

संदर्भ–

- सुभाष चंद्र कुशवाहा (2021), 'टंटया भीलः द ग्रेट इंडियन मूनलाइटर' हिन्द युग्म, नोयडा उत्तरप्रदेश
- सुभाष चंद्र कुशवाहा (2022), 'भील विद्रोहः संघर्ष के सवा सौ साल' हिन्द युग्म, नोयडा उत्तरप्रदेश
- मडावी शेषराव एन. (2022)'आदिवासी महानायकों के चरित्र' सुधीर प्रकाशन वर्धा
- बाबा भांड,(2023), 'जननायक तंटया भील' प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली